RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

फणीश्वरनाथ रेणु की नारी विमर्श से सम्बन्धित कथा साहित्य का कला पक्ष

सुनीता देवी

शोधार्थी श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

प्रस्तावना –

''साहित्य की सर्वाधिक मनोरंजनकारी विधा का नाम उपन्यास है। इसे कुछ विद्वान मनोरंजक साहित्य कहते हैं। इसमें कल्पना ही प्रधान रहती है। उपन्यास में काल्पनिक कथानक के माध्यम से यथार्थ जीवन का चित्र अंकित किया जाता है। मनोरंजकता उपन्यास की मूल प्रवृत्ति है, किन्तु उपन्यास मनोरंजन के साथ–साथ हृदय में नूतन शक्ति का संचार करता है। उन्नत एवं उच्चकोटि के उपन्यास प्रायः समाज, देश और राष्ट्र के उत्थान में सहायक होते हैं, मानवों के मनोबल की वृद्धि करते हैं और नूतन दृष्टिकोण एवं नूतन विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार हेतु अत्यधिक कार्य करते हैं, क्योंकि उपन्यास अपनी सहज सरसता से जन–मानस को आकृष्ट कर लेता है, कौतूहल पूर्ण घटनाक्रम से पाठकों के मन में पढ़ने की तीव्र लालसा उत्पन्न कर देता है। मर्मस्पर्शी चरित्रों द्वारा मानव–प्रकृति को द्रवीभूत कर देता है और यथार्थ जीवन की गुत्थियों में उलझाकर मानव को व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान करता है। इसी कारण साहित्य की संपूर्ण विधाओं में उपन्यास ही एक ऐसी विधा है, जो मनोरंजन और शिक्षा प्रदान करने में सर्वोपरि है और जिसमें पाठकों की सर्वाधिक रुचि दृष्टिगोचर होती है।''

आज का युग वैज्ञानिक युग है। इस यांत्रिक युग ने मानव की सहज स्वाभाविकता और लोक जीवन की मधुरता को विनष्ट कर डाला है, जिससे मानवता क्षुब्ध है। इस घुटन और टूटन के फलस्वरूप ही उपन्यास क्षेत्र में आंचलिक प्रवृत्ति का विकास हुआ। आज भी कतिपय ऐसे उपन्यास हैं, जिनमें प्राचीन सभ्यता ओर संस्कृति की झाँकी ग्राम्य जीवन में ही देखने को मिलती है। नगरीय सभ्यता और शुष्कता से ऊबकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आंचलिक शिल्प का निर्माण हुआ, जिससे खण्डित मनुष्यों के जीवन में पुनः राग बोध हुआ है। परिणामतः अंचल विशेष की रीति–नीति व्यवहार और जीवन से युक्त आंचलिक उपन्यासों का निर्माण हुआ। विभिन्न कथाकारों ने अपने मानस में ग्राम्यांचलों के जीवन को उभारा एवं उसे एक नया स्वर दिया।

फणीश्वरनाथ रेणु हिन्दी कथा साहित्य की नवीन विधा 'आंचलिक उपन्यास' साहित्य के अग्रणी कथाकार हैं। उन्होंने अन्य कथाकारों से अलग हटकर एक नयी जमीन की तलाश की और वह जमीन उनकी अपनी ग्रामीण जमीन है, जहाँ के जीवन को उन्होंने गहराई से जिया है और उसके रूप–रंग, गंध, स्पर्श, सुख–दुःख आदि का गहरा अनुभव प्राप्त किया है। दरअसल आंचलिक कथा साहित्य को ग्रामीण अंचल के अनुभूत जीवन से जोड़कर संवेदना, चरित्र और शिल्प के नये आयामों से जोड़ने का काम सर्वप्रथम रेणु ने ही किया और इस प्रकार उन्होंने न केवल आंचलिक उपन्यास साहित्य को एक जीवंत आयाम दिया बल्कि उसे अनुभवगत गहराई भी दी।

सन् 1954 ई0 में मैला आंचल के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी साहित्य में रेणु के उपन्यासों ने एक नयी क्रांति लाने का कार्य किया। मैला आँचल के बाद उनका दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' (1957 ई0) भी उसी प्रकार चर्चित हुआ जिस प्रकार उनका पहला उपन्यास उसके बाद क्रमशः उनके अन्य चार उपन्यास दीर्घतपा (1963 ई0), जुलूस (1965 ई0), कितने चौराहे (1966 ई0) एवं पल्टू बाबू रोड (1979 ई) ने भी पाठक वर्ग को चमत्कृत किया। 'मैला आँचल' जहाँ ग्रामीण अंचल की ओर संकेत करता है तो वही 'परती परिकथा' परती जमीन की व्यथा कथा की कहानी कहता है। रेणु के सभी औपन्यासिक कृतियों में कथ्यगत एवं शिल्पगत विशिष्टताएं भरी पड़ी है लेकिन उनमें परम्परागत उपन्यासों की कथावस्तु के समान विशेषताओं को ढूँढ़ना व्यर्थ है, क्योंकि इनमें न तो परम्परागत नायक है और न आदि, मध्य और अन्त की विशिष्ट स्थिति ही। हालांकि कुछ विद्वानों ने 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' के बाद के चार उपन्यासों को पूर्ण आंचलिक उपन्यास न मानकर अर्ध आंचलिक उपन्यास मानना ही उचित समझा है। अशोक वामनराव धुलधुले के शब्दों–'''दीर्घतपा', 'जुलूस', 'कितने चौराहे' तथा 'पल्टूबाबू रोड' ये उपन्यास 'रेणु' के अर्धआंचलिक उपन्यास हैं। इन उपन्यासों को सामाजिक उपन्यास की श्रेणी में भी रखा जा सकता है। इन उपन्यासों की कथावस्तु क्षेत्रीय तो है पर वे क्षेत्र सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि से अपने आस–पास के क्षेत्रों से न तो कोई विशिष्टता या पृथकता रखते हैं और न उनके जनजीवन की कोई विशिष्टता रखते हैं। 'जुलूस' उपन्यास में यह विशेषताएं हैं तो व्यापकता उनमें नहीं है। आंचलिक समस्याएँ भी इतने व्यापक रूप में इन उपन्यासों में दृष्टिगोचर नहीं होती। जन–जीवन की कोई विशिष्ट आंचलिक समस्या अथवा जीवन प्रणाली ही आंचलिक उपन्यास की पहली शर्त है।'' उक्त तथ्यों का रेणु के इन चारों उपन्यासों (दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे तथा पल्टूबाबू रोड) पर परीक्षण के उपरान्त यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि रेणु ने इन उपन्यासों में भी आंचलिक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विशेषताएँ विद्यमान हैं जैसे–दीर्घतपा में जहां लोकगीतों की चर्चा हुई है तो वहीं 'जुलूस' में लोकनृत्य की तथा 'कितने चौराहे' में ग्रामीण जीवन की अर्थात् रेणु के उपन्यासों की अनिवार्य विशेषता ही यही है कि उनके उपन्यास लोक चेतना से पूरी तरह संपृक्त है, जो आंचलिकता के कोरों कगारों को विभिन्न प्रकार से स्पर्श करते हैं।

रेणु ने अपने इन उपन्यासों में अनेकानेक घटनाओं पात्रों, कथाओं एवं लोकगीतों का सृजन किया है, जिसके मूल में उनका उद्देश्य केवल उस विशिष्ट अंचल को पूर्णतः उभारना है। जिसमें वे सफल भी हुए हैं। रेणु के उपन्यासों की प्रसिद्धि के कारण ही कुछ विद्वानों को इस उपन्यास में वर्णित समस्या, पूरे उत्तर भारत की समस्या लगती हैं–'डॉ0 शांति स्वरूप गुप्त के अनुसार–''यह गाँव (मेरीगंज) कहने को मिथिला का एक गाँव है, पर वह उत्तर भारत के प्रत्येक गाँव का प्रतिनिधित्व करता है।'' इसी प्रकार डॉ0 आनन्द नारायण शर्मा ने 'मैला आँचल' को पूर्णिया के मेरीगंज गाँव के माध्यम से भारतीय ग्राम जीवन का अत्यन्त विश्वसनीय और सवाक् चित्र माना है।'' उक्त विद्वानों के ऐसा मानने के पीछे सिर्फ यही कहा जा सकता है कि ये विद्वान मैला आंचल की प्रसिद्धि से अभिभूत होकर उन्होंने ये बात कही होगी, क्योंकि आंचलिक उपन्यासों में चित्रित अंचल अपनी भाषा, बोली, खान–पान, रीति–रिवाज, पर्व, त्योहार आदि को लेकर अन्य आंचलिक क्षेत्रों से भिन्न होते हैं। हालांकि कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि आंचलिक उपन्यास केवल ग्रामीण अंचल से ही संबद्ध हों, यह आवश्यक नहीं। नगर के एक छोटे से हिस्से को लेकर भी आंचलिक उपन्यास का निर्माण किया जा सकता है जैसे 'सागर लहरें और मनुष्य', 'बूंद और समुद्र' आदि।

रेणु ने अपने उपन्यासों में स्वतंत्रता के समय की आर्थिक स्थितियों का भी अवलोकन किया है कि किस प्रकार जमींदार किसानों की जमीनों को हड़पते जा रहे थे और किसान दूसरों के खेतों में मजदूरी करने के लिए विवश थे। धनाभाव के कारण गाँव के अधिकांश लोग भूखे और अधनंगे रहने को विवश हैं ''कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दो ने पैण्ट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आंगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेट कर काम चला लेती है, बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं।'' आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण ही वे इलाज नहीं करा पाते, तो कुछ स्त्रियां इन आर्थिक मजबूरियों के चलते ही गाँव के अमीर लोगों से अनैतिक संबंध बनाने को विवश हैं। रेणु ने अपने उपन्यासों में सामाजिक जीवन के कुछ ऐसे भी चित्र खींचे हैं जो अनैतिक हैं इसका कारण समाज, में अनैतिकता का बढ़ना है। मैला आंचल में महंत सेवादास एक अबोध बालिका लछमी को दासिन बनाकर उस पर हर रात बलात्कार करता है, तो 'दीर्घतपा' उपन्यास की मिसेज आनन्द अपने निजी स्वार्थों के चलते होस्टल की लड़कियों को किसी के भी सामने उपभोग के लिए प्रस्तुत कर देती हैं, तो कभी–कभी स्वयं भी इसके लिए तैयार हो जाती है।

'फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में लोक संस्कृति का व्यापक चित्रण हुआ है। रेणुजी ने अपने कर्मक्षेत्र के रूप में शहर को चुना। पर शहर में रहते हुए भी वे हमेशा गाँव से जुड़े रहे, इसलिए रेणुजी की रचनाओं की कथावस्तु ग्रामीण से ही संबंधित है। रेणुजी की जिन रचनाओं में शहरी जीवन का चित्रण हुआ है, उन रचनाओं में भी रेणुजी ने गाँव से सम्बन्धित कुछ पात्रों को शामिल कर गाँव से जोड़े रखा है। चूंकि रेणुजी की रचनाओं में लोक जीवन को अभिव्यक्ति मिलती है, इसलिये उनकी रचनाओं में अभिजात्य कला या शास्त्रीय कला का प्रयोग नहीं हुआ है। रेणुजी की रचनाओं में लोक मानस में प्रचलित कला रूपों जैसे – लोकगीत, लोक कथा, लोक नृत्य, लोक नाट्य, उत्सव, पर्व एवं अनुष्ठान में गाने वाले गीत, कीर्तन और लोकचित्रकला का सजीवता के साथ चित्रण हुआ है।

लोक मानस में प्रचलित इन कला रूपों को समग्रता में 'लोक वृत्त' या 'लोक वार्ता' की संज्ञा दे सकते हैं। यह 'लोक वार्ता' लोक संस्कृति की आत्मा है। श्री रामनाथ 'सुमन' के शब्दों में ''जब साहित्य राजप्रसादों के विलास–कक्षों में बन्द हो गया, तब प्रणय का पावनकारी मुक्तिनाद ग्राम वधूटियों एवं ग्राम–तरुणों के कण्ठों से अमराइयों के बीच फूटा, तब साहित्य की सरस्वती सहस्रधा होकर लोक–कण्ठ पर तरंगित हुई, तब संस्कृति अतवर्य विश्वासों एवं प्रेरणाओं का आधार लेकर मीरा की भक्ति के चरणों में घुँघरू बन गयी, तब वह लक्ष लक्ष ग्राम–निवासों की दीवारो पर शिल्प बनकर उभरी, तब उसने सहस्रशः शिलाओं को जीवित अहिल्या का रूप दिया, और वाद्य उसकी झंकार से मुखरित हो गये। जीवन अगणित तरंगों में बहा, अगणित वाद्यों में बजा और अगणित गीतों में फूट उठा। यही सब समष्टिगत आत्म–प्रकाश लोक–संस्कृति है।''

अतः लोक वार्ता लोक संस्कृति का प्राणवस्तु है। लोकवार्ता को समझने से पूर्व 'लोक' को समझना आवश्यक है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी 'लोक' को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि ... 'लोक' शब्द का अर्थ 'जनपद' या 'ग्राम' नहीं है, बल्कि नगरों और गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।''

'लोक' को अंग्रेजी के शब्द 'फोक' (Folk) का पर्याय माना जाता है। 'फोक' शब्द ऐंग्लो सैक्सन शब्द 'Fole' का विकसित रूप है। जर्मन में यह 'Volk' के रूप में प्रचलित है अर्थात ये शब्द लोक, फोक (Folk) 'Folc' एवं 'Volk' का सामानार्थी है। यह भी कह सकते हैं कि 'लोक' अंग्रेजी के 'फोंक' (Folk) का पर्यायवाची है और फोक (Folk) से फोक लोर (Folk lore) की उत्पत्ति हुई है, जिसके समानार्थी के रूप में हिन्दी में लोकवार्ता का प्रचलन है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

''यह फोकलोर एक व्यापक पारिभाषिक पद है। वह प्राचीन और मध्यकालीन लोक–जीवन के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण संवर्ग है। इस फोकलोर में या लोकवार्ता साहित्य में आदिम युगों से लेकर मध्यकाल तक के तथा एक हद तक आधुनिक काल तक के घुमन्तूपन, पशुपालन और कृषि–सम्बन्धों की नैसर्गिक और पारिस्परिक झलक दिखाई देती है। इस फोकलोर में लोक–नृत्य, लोक–कलायें, लोक–संगीत, लोक–कलाओं आदि का विविध रूप समाहित होते हैं।''

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य लोक संस्कृति का परिचायक है। रेणुजी की रचनाओं में कला का चित्रण लोक गीत, लोक–कथा, लोक–नृत्य, लोक–नाट्य, उत्सव, पर्व एवं अनुष्ठान में गाये जाने वाले गीत, कीर्तन और लोकचित्रकला एवं लोक शिल्प के रूप में हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण : 2007, दूसरी आवृत्ति : 2010
2. रेणु फणीश्वरनाथ, परती : परिकथा, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, चौथा संस्करण : 2009, पहली आवृत्ति : 2010
3. रेणु फणीश्वरनाथ, ठुमरी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण : 2009, पहली आवृत्ति : 2011
4. रेणु फणीश्वरनाथ, अगिनखोर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2008, पहली आवृत्ति : 2010
5. रेणु फणीश्वरनाथ, अच्छे आदमी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2009, सातवीं आवृत्ति : 2001
6. रेणु फणीश्वरनाथ, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली चौथा संस्करण : 1990, नौवीं आवृत्ति : 2013
7. रेणु फणीश्वरनाथ, ऋणजल धनजल, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2005, तीसरी आवृत्ति : 2013
8. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–1, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
9. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–2, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
10. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–3, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
11. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–4, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007
12. यायावर भारत सम्पादक, रेणु रचनावली खण्ड–5, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण : 2007

RRIJM 2015, All Rights Reserved